lar rqylh lkgc }kjk jfpr lkfgR; esa fufgr
xk;u 'kSfy;ksa dk rkfÙod foospu

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM ;wfuoflZVh½

n;kyckx] vkxjk ls laxhr esa

ih&,p-Mh- dh mikf/k grq çLrqr

'kks/k&izcU/k dh izLrkfor :ijs[kk

शोधार्थिनी

nj'kk vk/kkjh

संगीत विभाग (गायन)

शोध–निर्देशिका

izks- lq/kk lgxy

संगीत विभाग (गायन)

laxhr foHkkx] dyk&ladk;]

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV] ¼MhEM ;wfuoflZVh½]

n;kyckx] vkxjk&282005

2020

Hkfedk

संत तुलसी साहब संत परम्परा के अग्रणी महाआचार्यों में से एक हैं। उन्होंने अपने दर्शन सिद्धांतों, उपदेशों–साहित्य एवं सांगीतिक उद्‌बोधन द्वारा जनमानस को अंधकार से प्रकाशमार्ग पर अग्रसर किया। उनके द्वारा रचित साहित्य जैसे घट–रामायण, शब्दावली भाग–1, शब्दावली भाग–2 तथा रत्नसागर में लौकिक तथा अलौकिक पक्षों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। आध्यात्मिक मार्ग के सूक्ष्म भेद, अभ्यास विधियाँ, सुमिरन ध्यान, भजन जहाँ एक ओर किसी साधारण प्राणी को अलौकिकता का दर्शन करवाते है, वही दूसरी ओर इस संसार की रीतियाँ, कुरीतियाँ, प्रवित्तियों एवं नश्वरता को समझते हुए यहाँ से प्रस्थान मार्ग का निर्देशन प्राप्त होता है।

वृहद् संत परम्परा में एवं इसकी शाखाओं व उपशाखाओं में संगीत एक अभिन्न अंग होता है। संतों ने अपनी वाणी को व्यापक करने हेतु साहित्य की रचना की तथा उस पवित्र साहित्य को अति व्यापक करने के लिए उसे संगीत द्वारा सशक्त, पुष्ट एवं परिपक्व किया। और ऐसा संगीताधारित साहित्य ही जनजीवन में आध्यात्मिक चिन्तन को उद्वेलित कर सकता है, इस कल्पना–शीलता को संज्ञान में रखते हुए संत तुलसी साहब ने आध्यात्मिक चिन्तन रूपी स्वर ताल प्रवाहिनी को साधारण जन जीवन के मानस पटल पर तीव्र वेग से प्रवाहित कर दिया।

संत तुलसी साहब ने जिस प्रकार के संगीत का प्रयोग एवं वर्णन किया वह भी अद्वितीय है। उन्होंने अनेक गायन शैलियों का वर्णन किया है जैसे–ध्रुपद, धमार, होरी, होरी मारफ़त, टप्पा, तिल्लाना मल्हार, ठुमरी, ग़जल, रेख़ता, झूलना, लावनी, सावन एवं चाचरीख्याल। इन्हीं गायन शैलियों हेतु संत तुलसी साहब ने अनेक पदों की रचनाएँ विभिन्न रागों में की जैसे–मल्हार, बसंत, बिहाग, यमन, धनाश्री, हमीर, कान्हड़ा, हिण्डोल, परज, कामोद इत्यादि।

उपरोक्त वर्णित पद रचनाओं के लिए संत तुलसी साहब ने साहित्य का धनी होने का प्रमाण भी दिया। उन्होंने न केवल ब्रज भाषा में रचनाएँ की अपितु पंजाबी एवं मराठी में भी उनका पद साहित्य प्राप्त होता है।

संत तुलसी साहब ने जहाँ एक ओर विभिन्न काव्य शैलियों जैसे–दोहा, चौपाई का वर्णन किया वहीं दूसरी ओर ऐसी भी काव्य शैलियों की रचना की जिन्हें वर्तमान में समझना एवं गायन

करना अत्यंत कठिन है। जैसे–अड़ियल, होरी मारफ़त, ककहरा। इसके साथ–साथ संत तुलसी साहब ने न केवल काव्य अपितु लघु कथाएँ एवं नाट्य प्रसंगों का भी वर्णन किया है।

सभी गायन शैलियों को संगीत का दृढ़ आधार देने हेतु संत तुलसी साहब ने विभिन्न तालों का भी प्रयोग किया जैसे तिताला (तीन ताल) दादरा, कहरवा, धुमाली, धमार आदि।

संत तुलसी साहब द्वारा रचित मार्मिक, सूक्ष्मभेद प्रधान, अन्तरमार्गी साहित्य को जब अद्वितीय संगीत का आधार प्राप्त हुआ, तो वह साहित्य द्विगुणित होकर सोने पर सुहागा कहावत को चरितार्थ करते हुए सर्वत्र सुगंध की भॉति व्याप्त हो गया।

ऐसे महान संत तुलसी साहब के विषय में जानकारी एकत्रित करने, उनके विषय में साहित्यिक, सांगीतिक, दार्शनिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक चिंतन एवं परिप्रेक्ष्य को जानने, समझने एवं अध्ययन करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया, जिसका विवरण इस प्रकार है–

- लघु शोध प्रबन्ध
- शोध प्रबन्ध
- शोध पत्र
- पत्र–पत्रिकाएँ
- समाचार पत्र
- पुस्तकें

'kks/k izcU/k

1. संत बूला साहिब और उनका साहित्य–रागिनी सिंह–V.B.S पूर्वांचल यूनिवर्सिटी–2008
2. संत पलटु साहिब की वाणी में भक्ति का स्वरूप विश्लेषण – ग्यानती यादव–V.B.S पूर्वांचल यूनीवर्सिटी– 2002
3. संत साहित्य का सामाजिक और धार्मिक महत्व : आधुनिक संदर्भ में – जी मोहनन–महात्मा गांधी यूनीवर्सिटी–2001

4. निर्गुन संत परम्परा और स्वामी श्याम का काव्य – अनीता नय्यर–पंजाब यूनीवर्सिटी–2006

5. संत साहित्य के विविध आयाम– अहसान मुहम्मद– अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी– 2015

6. संत काव्य में समाज चेतना– जे.टी. मरियामा – महात्मा गांधी यूनीवर्सिटी– 2013

i= if=dk,¡

1. संत वाज़िद और उनका काव्य– मदन शर्मा – मधुमती वर्ष 55, अंक 03, मार्च, 2015– राजस्थान साहित्य अकादमी न्यू यूनाइटेड प्रिन्टर्स, उदयपुर।

2. भारतीय संत काव्य–डॉ0 गार्गी शरण मिश्र मराल – मासिक मधुमती वर्ष 55, अंक 9 नवम्बर–2015 राजस्थान साहित्य अकादमी न्यू यूनाइटेड प्रिन्टर्स, उदयपुर।

3. राजस्थान में भक्ति आंदोलन : अनतिख्यात संत महिलाएँ– मासिक मधुमती वर्ष 56, अंक 7, सितम्बर 2016–राजस्थान साहित्य अकादमी न्यू यूनाइटेड प्रिन्टर्स, उदयपुर।

4. संत परम्परा और साहित्य की सार्थक भूमिका–डॉ0 ओंकारनाथ चतुर्वेदी – मासिक मधुमती वर्ष 54, अंक–8, अगस्त 2014– राजस्थान साहित्य अकादमी न्यू यूनाइटेड प्रिन्टर्स, उदयपुर।

5. संत शिरोमणि जगजीवन दास की सामाजिक दृष्टि– सुमन रानी – अनुसंधान शोध त्रैमासिक जुलाई–सितम्बर 2016 – अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 105/249 चमनगंज, कानपुर–208001

6. रविदास की भक्ति का स्वरूप–डॉ0 कामिनी साहिर – अनुसंधान शोध त्रैमासिक, अप्रैल–जून 2016 – अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 105/249 चमनगंज, कानपुर–208001

iLrd

1. भारतीय सांगीतिक जगत को तुलसीदास का योगदान–डॉ0 अरविन्द कुमार– प्रथम संस्करण 2000–ISBN:81-7453-166-1-संजय प्रकाशन 4378/4-B, 2009 JMD HOUSE गली मुराली लाल अंसारी रोड–दरियागंज।

2. संत रैदास की वाणी का संगीत माधुर्य–डॉ0 मधुबाला सक्सैना–प्रथम संस्करण– 2014, ISBN 971-81-8457-572-9- कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स–4697/5-2/A, अंसारी रोड, दरियागंज।
3. उत्तराखण्ड की संत परम्परा–श्री गिरिराज शाह– प्रथम संस्करण– 2004 ISBN-8171241573 विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारानसी।
4. उत्तरी भारत की संत परम्परा–परशु राम चतुर्वेदी– प्रथम संस्करण –2019 ISBN, 3 : 978389243215-Hindi Book Center 4/5B ASAF ALI ROAD, NEW DELHI 110001।
5. शाहपुरा की रामसनेही सन्त काव्य परम्परा–डॉ0 माधव प्रमोद पाण्डेय प्रथम संस्करण – 1999-ITEM CODE-NZL340 हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद।
6. घट रामायण–तुलसी साहब (हाथरस वाले) संपादक : तथा टीकाकार–योगेन्द्र प्रताप सिंह–प्रथम संस्करण 2009 ISBN : 978-81-932235-7-4। वेल बिडियर प्रिन्टिंग वर्क्स 56A/13 मोतीलाल नेहरू रोड़, इलाहाबाद।
7- रत्नसागर–तुलसी साहब (हाथरस वाले) – प्रथम संस्करण 2019–बेलबीडियर Printing works 14, motilal nehru Road, Allahabad.
8. तुलसी साहिब की शब्दावली–भाग–1 तुलसी साहब (हाथरस वाले) प्रथम संस्करण–2 बेलवीडियर PRINTING WORKS 13, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद।
9. तुलसी साहिब की शब्दावली : भाग – 2 तुलसी साहब (हाथरस वाले) प्रथम संस्करण–2014–बेलबीडियर प्रिन्टिंग वर्क्स 56/A13, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद।
10. शब्द तुलसी साहब के एवं संवाद महाराज तुलसी साहब का साथ फूलदास साधु कबीर पंथी के, प्रकाशक – राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग़, आगरा, प्रथम संस्करण – 2014 ISBN: 978-81-89288-79-2- दयालबाग़ प्रेस, दयालबाग़, आगरा – 5

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि इतने उच्च कोटि के संत तुलसी साहब से सम्बन्धित साहित्य नगण्य ही है। कतिपय पुस्तकों एवं शोध प्रबंधों में भी उनके नाम का

ही उल्लेख प्राप्त होता है। उनके साहित्य, सांगीतिक उच्चतम तथा शीर्ष कोटि की आध्यात्मिकता से सम्बन्धित उल्लेख केवल उनके ही द्वारा लिखित तीन पुस्तकों में प्राप्त होता है। जो क्रमशः शब्दावली भाग –1, शब्दावली भाग –2, रत्नसागर एवं घटरामायण हैं।

अतः महान संत तुलसी साहब के आध्यात्मिक व दार्शनिक रहस्यों को जानने के लिए, उनके द्वारा वर्णित सांगीतिक गायन शैलियों का गहनता से अध्ययन करने के लिए तथा उनके द्वारा उल्लिखत विभिन्न गायन शैलियों की साहित्यिक व सांगीतिक तकनीक का गहन अध्ययन करने के लिए निम्न विषय का चयन किया गया है।

fo"k; dFku

ßlr r|ylh lkgc }kjk jfpr lkfgR; e fufgr xk;u 'kfy;k dk rkfÙod foopuÞ

v/;;u dh vko';drk

महान संत तुलसी साहब द्वारा लिखित धार्मिक पुस्तकों में विभिन्न साहित्यिक एवं सांगीतिक शैलियों का वर्णन किया गया है। किन्तु उन्हें किसी भी प्रकार से प्रकाश में नही लाया गया है। अतः उनके द्वारा लिखित साहित्य को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है।

संत तुलसी साहब द्वारा वर्णित विभिन्न गायन शैलियों को भी उजागर करने की आवश्यकता है तथा इन गायन शैलियों में निहित राग–प्रयोग, ताल–प्रयोग तथा तकनीक को भी उजागर करने की आवश्यकता है।

v/;;u dk egRo

प्रस्तावित शोध महान संत तुलसी साहब द्वारा लिखित साहित्य एवं उसमें वर्णित विभिन्न गायन–शैलियों को संरक्षित एवं संवर्धित करने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

v/;;u d mnn';

1. संत तुलसी साहब के जीवन परिचय एवं साहित्य का अध्ययन करना।
2. संत तुलसी साहब के साहित्य का विश्लेषण करना।

3. संत तुलसी साहब द्वारा लिखित साहित्य में सांगीतिक गायन शैलियों, तत्वों तथा गायन विधियों का अध्ययन करना।

4. संत तुलसी साहब द्वारा वर्णित सभी गायन शैलियों का विश्लेषण करना।

5. संत तुलसी साहब द्वारा वर्णित सभी गायन–शैलियों की स्वरलिपियाँ निर्मित करना।

6. साक्षात्कार के माध्यम से, विभिन्न विशेषज्ञों से साहित्य एवं संगीत प्रधान जानकारियाँ एकत्रित करना।

fo"k; dk ifjlhekdu

कार्य एवं समय सीमा को देखते हुए प्रस्तावित शोध अध्ययन के अन्तर्गत मात्र संत तुलसी साहब द्वारा लिखित साहित्य का ही अध्ययन किया जायेगा।

v/;;u dk L=kr

प्रस्तावित शोध को संचालित करने हेतु विभिन्न स्त्रोतों से जानकारी एवं सूचनाएँ एकत्रित की जायेगी।

- समाध संत तुलसी साहब, हाथरस
- केन्द्रीय पुस्तकालय, डी.ई.आई.
- दयालबाग़ प्रेस, दयालबाग़, आगरा
- आगरा विश्वविद्यालय
- Website & Internet

dk;Zfof/k

प्रस्तावित शोध को संचालित करने हेतु व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।

विभिन्न शोध उपकरणों जैसे–प्रश्नावली, साक्षात्कार का प्रयोग, विभिन्न विद्युत उपकरणों जैसे– सी.डी., कम्प्यूटर, लैपटॉप का प्रयोग किया जायेगा तथा सांगीतिक उपकरणों जैसे–स्वरलिपियों हेतु हारमोनियम, इलैक्ट्रोनिक तानपुरा एवं तबले का प्रयोग किया जायेगा।

v/;k;ksa dk foHkktu

iFke v/;k; %& महान संत तुलसी साहब का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

f}rh; v/;k; %& महान संत तुलसी साहब के साहित्य का विस्तृत अध्ययन।

r`rh; v/;k; %& महान संत तुलसी साहब द्वारा वर्णित गायन शैलियों का अध्ययन।

prqFkZ v/;k; %& महान संत तुलसी साहब द्वारा वर्णित गायन शैलियों का विश्लेषण।

iape v/;k; %&

1. महान संत तुलसी साहब द्वारा वर्णित गायन शैलियों के संदर्भ में प्राप्त धुनों का स्वरांकन
2. महान संत तुलसी साहब द्वारा वर्णित गायन शैलियों के संदर्भ में अप्राप्य पदों का रागानुसार स्वरलिपि निर्माण।

lUnHkZ xzUFk lwph

'kks/k izcU/k

1. संत बूला साहिब और उनका साहित्य–रागिनी सिंह–V.B.S पूर्वांचल यूनिवर्सिटी–2008
2. संत पलटु साहिब की वाणी में भक्ति का स्वरूप विश्लेषण – ग्यानती यादव–V.B.S पूर्वांचल यूनीवर्सिटी– 2002
3. संत साहित्य का सामाजिक और धार्मिक महत्व : आधुनिक संदर्भ में – जी मोहनन– महात्मा गांधी यूनीवर्सिटी–2001
4. निर्गुन संत परम्परा और स्वामी श्याम का काव्य – अनीता नय्यर–पंजाब यूनीवर्सिटी– 2006
5. संत साहित्य के विविध आयाम– अहसान मुहम्मद– अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी– 2015
6. संत काव्य में समाज चेतना– जे.टी. मरियामा – महात्मा गांधी यूनीवर्सिटी– 2013

i= if=dk,¡

1. संत वाज़िद और उनका काव्य– मदन शर्मा – मधुमती वर्ष 55, अंक 03, मार्च, 2015– राजस्थान साहित्य अकादमी न्यू यूनाइटेड प्रिन्टर्स, उदयपुर।
2. भारतीय संत काव्य–डॉ0 गार्गी शरण मिश्र मराल – मासिक मधुमती वर्ष 55, अंक 9 नवम्बर–2015 राजस्थान साहित्य अकादमी न्यू यूनाइटेड प्रिन्टर्स, उदयपुर।
3. राजस्थान में भक्ति आंदोलन : अनतिख्यात संत महिलाएँ– मासिक मधुमती वर्ष 56, अंक 7, सितम्बर 2016–राजस्थान साहित्य अकादमी न्यू यूनाइटेड प्रिन्टर्स, उदयपुर।

4. संत परम्परा और साहित्य की सार्थक भूमिका–डॉ0 ओंकारनाथ चतुर्वेदी – मासिक मधुमती वर्ष 54, अंक–8, अगस्त 2014– राजस्थान साहित्य अकादमी न्यू यूनाइटेड प्रिन्टर्स, उदयपुर।

5. संत शिरोमणि जगजीवन दास की सामाजिक दृष्टि– सुमन रानी – अनुसंधान शोध त्रैमासिक जुलाई–सितम्बर 2016 – अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 105/249 चमनगंज, कानपुर–208001

6. रविदास की भक्ति का स्वरूप–डॉ0 कामिनी साहिर – अनुसंधान शोध त्रैमासिक, अप्रैल–जून 2016 – अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 105/249 चमनगंज, कानपुर–208001

i|Lrd

1. भारतीय सांगीतिक जगत को तुलसीदास का योगदान–डॉ0 अरविन्द कुमार– प्रथम संस्करण 2000–ISBN:81-7453-166-1-संजय प्रकाशन 4378/4-B, 2009 JMD HOUSE गली मुराली लाल अंसारी रोड–दरियागंज।

2. संत रैदास की वाणी का संगीत माधुर्य–डॉ0 मधुबाला सक्सैना–प्रथम संस्करण– 2014, ISBN 971-81-8457-572-9- कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स–4697/5-2/A, अंसारी रोड, दरियागंज।

3. उत्तराखण्ड की संत परम्परा–श्री गिरिराज शाह– प्रथम संस्करण– 2004 ISBN-8171241573 विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारानसी।

4. उत्तरी भारत की संत परम्परा–परशु राम चतुर्वेदी– प्रथम संस्करण –2019 ISBN, 3 : 978389243215-Hindi Book Center 4/5B ASAF ALI ROAD, NEW DELHI 110001 |

5. शाहपुरा की रामसनेही सन्त काव्य परम्परा–डॉ0 माधव प्रमोद पाण्डेय प्रथम संस्करण – 1999-ITEM CODE-NZL340 हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद।

6. घट रामायण–तुलसी साहब (हाथरस वाले) संपादक : तथा टीकाकार–योगेन्द्र प्रताप सिंह–प्रथम संस्करण 2009 ISBN : 978-81-932235-7-4। वेल बिडियर प्रिन्टिंग वर्क्स 56A/13 मोतीलाल नेहरू रोड़, इलाहाबाद।

7- रत्नसागर–तुलसी साहब (हाथरस वाले) – प्रथम संस्करण 2019–बेलबीडियर Printing works 14, motilal nehru Road, Allahabad.

8. तुलसी साहिब की शब्दावली–भाग–1 तुलसी साहब (हाथरस वाले) प्रथम संस्करण–2 बेलवीडियर PRINTING WORKS 13, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद।

9. तुलसी साहिब की शब्दावली : भाग – 2 तुलसी साहब (हाथरस वाले) प्रथम संस्करण–2014–बेलबीडियर प्रिन्टिंग वर्क्स 56/A13, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद।

10. शब्द तुलसी साहब के एवं संवाद महाराज तुलसी साहब का साथ फूलदास साधु कबीर पंथी के, प्रकाशक – राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग़, आगरा, प्रथम संस्करण – 2014 ISBN: 978-81-89288-79-2- दयालबाग़ प्रेस, दयालबाग़, आगरा – 5

i'ukoyh

प्रस्तावित शोध की रूपरेखा का निर्माण करने से पूर्व कलाकार विद्वानों से पूछे गये प्रश्न, संत तुलसी साहब के जीवन परिचय साहित्य एवं विभिन्न कलाकारों, पाठियों, रागियों से पूछे गये प्रश्न।

प्रश्न–1 : संत तुलसी साहब के जीवन परिचय के बारे में क्या जानते है?

प्रश्न–2 : संत तुलसी साहब द्वारा रचित कौन–कौन सा साहित्य है?

प्रश्न–3 : संत तुलसी साहब के कुल कितने ग्रन्थ रचित हुए?

प्रश्न–4 : कौन–कौन से ग्रन्थों से संगीत विषयक सामग्री प्राप्त होती है?

प्रश्न–5 : संत तुलसी साहब की रचनाओं में कौन–कौन सी शास्त्रीय गायन शैलियों का वर्णन है?

प्रश्न–6 : क्या गायन शैलियों के अनुरूप गायन होता है?

प्रश्न–7 : रागाधारित गायन शैलियों का किस प्रकार प्रयोग होता है?

प्रश्न–8 : यदि रचनाओं को रागों के अनुसार नही गाते तो किन रागों पर आधार बना गाते है?

प्रश्न–9 : लगभग कितने राग व तालों का प्रयोग रचनाओं में प्राप्त होता है?

प्रश्न–10 : कितनी गायन शैलियों का वर्णन रचनाओं में किया गया है?

प्रश्न–11 : क्या ऋतु प्रधान रचनाएँ भी रचित की गई है?

प्रश्न–12 : हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त क्या किसी और भाषा में रचनाएँ रचित की गई है?

प्रश्न–13 : संत तुलसी साहब जी ने रचनाओं हेतु कौन–कौन सी भाषाओं का प्रयोग किया है?

प्रश्न–14 : हाथरस के अतिरिक्त कहीं और भी उनकी रचनाओं का गायन होता है?

प्रश्न–15 : क्या अप्रचलित काव्य–शैलियों का परिचय दिया गया है?

प्रश्न–16 : संत तुलसी साहब द्वारा रचित गायन शैलियों को किस प्रकार निर्वाहित किया जाता है?

प्रश्न–17 : उनके द्वारा रचित रचनाओं के सांगीतिक स्वरूप के क्रियात्मक प्रमाण कहीं प्राप्त होते है?

प्रश्न–18 : क्या ये परम्परा प्रधान गायन है?

प्रश्न–19 : क्या इनमें परिवर्तन है या उन्हीं रागों को गाते है?

प्रश्न–20 : रचनाओं के गायन में कौन–कौन से वाक्य प्रयुक्त होते है?